ISSN : 0975-3664
RNI : U.P.BIL/2012/43696

शोध धारा
SHODH DHARA

कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रीव्यूड, रेफर्ड एवं यू.जी.सी. केयर लिस्टेड, शोध जर्नल
[A Quarterly Peer Reviewed, Reffered, UGC Care Listed, Bi-lingual (Hindi & English) Research Journal of Arts & Humanities]

Year : 2021 **Month : March** **Vol. 1**

प्रधान संपादक
Chief Editor
डॉ0 (श्रीमती) नीलम मुकेश
Dr. (Smt.) Neelam Mukesh

60

संपादक
Editor
डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय
Dr. Rajesh Chandra Pandey

प्रकाशक : शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन), उ0प्र0
Published by : Shaikshik Avam Anusandhan Sansthan, Orai (Jalaun) U.P.

Scanned with CamScanner

शोध धारा
SHODH-DHARA
वर्ष : 2021, मार्च
Year : 2021, March
Vol.1, अंक 1
कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रीव्यूड, रेफर्ड एवं यूजीसी केयर लिस्टेड शोध जर्नल
A Quarterly Peer Reviewed, Reffered, and U.G.C. Care Listed Research Journal of Arts & Humanities
प्रकाशन : डॉ० राजेश चन्द्र पाण्डेय (महासचिव)
शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन) उ०प्र०
Publisher : Dr. Rajesh Chandra Pandey (General Secretary)
Shaikshik Avam Anusandhan Sansthan, Orai (Jalaun) U.P.
मुद्रक : कस्टमर गैलरी, मौनी मंदिर, उरई (जालौन), उ०प्र०
Printer : Customer Gallery, Mauni Mandir, Orai (Jalaun) U.P.
अंशदान/Subscription :

एक अंक One Volume	: 100/-
व्यक्तिगत पंचवर्षीय Individual Five Year	: 2000/-
व्यक्तिगत आजीवन Individual Life Membership	: 3000/-
संस्थागत पंचवर्षीय Institutional Five Year	: 2500/-
संस्थागत आजीवन Institutional Life Membership (Duration of Life Membership is 10 year)	: 5000/-

नोट : सभी प्रकार के भुगतान 'संपादक शोधधारा' उरई के नाम से देय है।
Note : All payments relating to this journal shall be made by draft in favoure of the "*Sampadak Shodh Dhara*", Payble at **Orai.**
The Journal does not ask for publication charges in any form.
कार्यालय : डॉ० (श्रीमती) नीलम मुकेश
प्रधान संपादक, शोध-धारा, १०७५, बैंक कॉलोनी, जालौन रोड, उरई (जालौन), उ०प्र०
: डॉ० राजेश चन्द्र पाण्डेय
संपादक, शोध-धारा, २६२, पाठकपुरा, उरई (जालौन), उ०प्र०
Office : Dr. (Smt.) Neelam Mukesh
Chief Editor, Shodh-Dhara, 1075, Bank Colony, Jalaun Road, Orai (Jalaun) 285001, U.P.
Mobile : 9450109471
: Dr. Rajesh Chandra Pandey
Editor, Shodh-Dhara, 262, Pathakpura, Orai (Jalaun) 285001, U.P.
Mobile : 9415592698(W), 9198204835, Email:shodhdharajournal2005@gmail.com

डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय (महासचिव, शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन)) मुद्रक, प्रकाशक और स्वामी द्वारा कस्टमर गैलरी, उरई (जालौन) से मुद्रित करवाकर शैक्षिक एवम् अनुसंधान संस्थान, उरई (जालौन) से प्रकाशित। संपादक –डॉ. राजेश चन्द्र पाण्डेय

Note : * The views expressed in the published articles are their writers own. The agreement of the Editorial Board or the Shodh Pratisthan is not necessary.* Disputes, If any shall be decided by the court at Orai (Jalaun) U.P.

Scanned with CamScanner

ISSN : 0975-3664

RNI : U.P.BIL/2012/43696

शोध धारा
SHODH-DHARA

कला और मानविकी का त्रैमासिक, पीयर रिव्यूड, रेफर्ड एवं यूजीसी केयर लिस्टेड शोध जर्नल (साहित्य, कला और संस्कृति पर केंद्रित)
(A quarterly peer reviewed, referred, U.G.C. care listed research journal of Art & Humanities)

Year 2021 **March** **Vol. 1**

अनुक्रम Contents

शीर्षक	लेखक	पृ०सं०
शोध आलेख		
✦ हिन्दी साहित्य		1-167
१. भूमंडलीकरण और समकालीन हिंदी कविता	डॉ. शिवजी उत्तम चवरे	1-6
२. 'आज बाज़ार बन्द है' : वेश्यामुक्ति की पहल	डॉ. मिनी जोर्ज	7-12
३. आधुनिक हिन्दी कविता में अंतर्विषक संदर्भ	डॉ० मनोज कुमार स्वामी	13-17
४. शिवमूर्ति के 'कुच्ची का कानून' में प्रतिबिंबित ग्रामीण चेतना	डॉ० उमा देवी	18-22
५. कंचन सेठ की कविताओं में सामाजिक यथार्थ	डॉ० गोरखनाथ तिवारी	23-26
६. स्त्री अस्मिता की आदर्श कथाकार कमल कुमार	डॉ० शशिकांत मिश्र	27-33
७. भाषा : एक विमर्श	डॉ० अम्बिका उपाध्याय	34-40
८. तमस उपन्यास में देश विभाजन की त्रासदी	विनोद कुमार मौर्य	41-47
९. पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में राजेश जोशी तथा ज्ञानेन्द्रपति की चिंता (भू–पर्यावरण के विशेष संदर्भ में)	डॉ० सुनीता शर्मा निम्रता	48-56
१०. लीलाधर जगूड़ी के काव्य 'नाटक जारी है' में राजनीतिक चेतना	डॉ० विवेकानन्द पाठक	57-64
११. ब्रज का लोकसाहित्य	डॉ० सूर्यकान्त त्रिपाठी	65-70
१२. बुन्देली लोक काव्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना	सर्जना यादव	71-75
१३. हिंदी और मराठी की गज़ल में सामाजिक विषमता की सशक्त अभिव्यक्ति	डॉ० नवनाथ गाड़ेकर	76-80
१४. देहरी से देह तक पहुँचती : शैलजा पाठक की 'कमाल की औरतें'	डॉ० नीतू परिहार	81-87
१५. परम्परागत ढाँचे से पृथक स्वातंत्रयोत्तर भारत के जीवन का जीवंत दस्तावेज : 'राग दरबारी'	ज्ञानेन्द्र मणि त्रिपाठी	88-92
१६. नई कहानी आंदोलन के अंत: सूत्रों की पड़ताल	डॉ० राम किंकर पाण्डेय	93-98
१७. २१वीं सदी में मीडिया और हिन्दी का वैश्विक विस्तार	डॉ० अरूण कुमार चतुर्वेदी	99-103
१८. इक्कीसवीं शताब्दी के नवगीत में स्त्री विमर्श के विविध आयाम	सीमा यादव	104-108
१९. 'एक न एक दिन' : रिश्तों के मर्म पर अर्थतंत्र का निर्मम	मृत्युंजय सिंह	109-116

Scanned with CamScanner

प्रहार		
२७. मीराबाई के रामभक्ति पदो में राम	सुमन रानी प्रो० मन्जुनाथ एन. अंबिग	117-122
२१. शान्ति सुमन के गीतों में संवेदना के विविध आयाम	मोहन कुमार	123-130
२२. अज्ञेय का कथा साहित्य	डॉ० सत्य प्रकाश पाल	131-136
२३. अज्ञेय के साहित्य में चित्रित समकालीन जीवनबोध	डॉ० जयलक्ष्मी एफ. पाटील	137-141
२४. उदयप्रकाश की कहानियों में घर–परिवार : दलित चेतना के संदर्भ में	गिनी एस. डॉ. बी. कामकोटि	142-144
२५. असमिया साहित्य में रोमांटिसिज्म का प्रभाव	दिगंत बोरा	145-150
२६. आँचलिकता और दलित चेतना से संवाद करती 'मुर्दहिया'	प्रियदर्शिनी दुबे	151-159
२७. हिन्दी की व्यंग्य परम्परा	डॉ० सीमा शर्मा	160-167
✦ संस्कृत साहित्य		**168-182**
२८. आचार्य सुरेश्वराभिमत आभासवाद	डॉ० मोनू कुमार मिश्र	168-173
२९. राष्ट्रीय आध्यात्मिक पुनर्जागरण के पुरोधा	प्रो० रमेश चन्द्र भारद्वाज	174-182
✦ दर्शन		**183-195**
३०. गुरु अंगददेव की वाणी के मूल चिंतन बिंदु	डॉ० सुनीता शर्मा	183-190
३१. सांख्य दर्शन के संदर्भ में शिक्षा का सम्प्रत्यय	कृष्णपाल सिंह डॉ० रामेन्द्र कुमार गुप्त	191-195
✦ संस्कृति		**196-282**
३२. कार्बी–संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव	डॉ. नागेश्वर यादव	196-200
३३. भारतीय संस्कृति में युवा महिलाओं के बदलते मूल्य : धर्म, कला और साहित्य के विशेष संदर्भ में	डॉ० विजय प्रताप मल्ल प्रीति वर्मा	201-206
३४. जनजातियों में आत्मावाद और टोटमवाद की अवधारणा	डॉ० संजय नाईनवाड	207-211
३५. भारतीय उच्च शिक्षा में मानवीय विकास एवं नैतिक मूल्यों की उपादेयता	रफ़त फातिमा रजनी कान्त दीक्षित	212-218
३६. भारत–नेपाल : सांस्कृतिक, धार्मिक एवं भू–राजनैतिक संबंध वर्तमान परिदृश्य में	डॉ० विजय प्रताप मल्ल	219-225
३७. आधुनिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता	शालिनी सिंह	226-232
३८. संस्कृति की अवधारणा एवं विधिक संरक्षण	प्रो० रजनीश कुमार पटेल डॉ० सुधीर कुमार चतुर्वेदी	233-247
३९. सामाजिक संस्कृति के निर्माण में सिनेमा और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण	विजय रविन्द्र मोहन	248-251
४०. हिन्दी भाषा में प्रस्तुत पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के डॉक्टरेट शोध प्रबंध की विषय वस्तु का विश्लेषण	रूपेन्द्र सिंह प्रो० रोचना श्रीवास्तव	252-257
४१. स्वास्थ्य संबंधी झूठी सामग्री और मीडिया : समाचार पत्रों के विशेष संदर्भ में	डॉ० सृचना सचदेवा डॉ० अनिल कुमार नैथानी	258-265

Scanned with CamScanner

ISSN : 0975-3664, RNI : U.PBIL/2012/42696
SHODH-DHARA ; Mar 2021; Vol. 1; P. 207-211

संस्कृति

जनजातियों में आत्मावाद और टोटमवाद की अवधारणा

डॉ० संजय नाईनवाड

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, एस.बी. झाडबुके महाविद्यालय, वार्शी, महाराष्ट्र

(प्राप्त : २६ नवंबर २०२०)

Abstract

विश्व के प्रत्येक कोने में जनजातीय समुदाय निवास करता है। जनजातियों का अपना धर्म है, जो प्रकृति पर आधारित है, जिसे आजकल भारत में 'सरना धर्म' या 'आदि धर्म' भी कहा जाता है। जनजातीय धर्म की बुनियादी अवधारणाओं में आत्मावाद और टोटम का अनन्य साधारण स्थान है। जनजातीय धर्म की इन दोनों अवधारणाओं पर कई अध्ययन और शोध हुए हैं। इन शोधकर्ताओं में भारतीय और विदेशी विद्वानों का समावेश है। प्रस्तुत शोध–लेख में जनजातियों की आत्मावाद और टोटमवाद की अवधारणा पर विचार करते हुए हिंदी में जनजातियों को केंद्र में रखकर लिखे गए उपन्यासों में इन अवधारणाओं को लेकर किया गया चित्रण भी प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसके आधार पर प्रस्तुत अवधारणाओं को आसानी से समझा जा सकता है।

Figure : 00 References : 11 Table : 00

Key Words: मानवविज्ञान, आदिमानव, बोंगा, देह आत्मा, मुक्त आत्मा, जंगतोपा, अदिंग, हसा, हुवांग, हरी एवं सूखी मृत्यु, टोटम एवं किली।

विषय विवेचन:आत्मावाद : आत्मावाद को 'बोंगावाद' या 'जीववाद' कहा गया है। जीववाद की विचारधारा को सर्वप्रथम ब्रिटिश मानवविज्ञानी ई.बी. टायलर ने प्रस्तुत किया था। भारत में भी मानवविज्ञानी शरदचंद्र राय ने 'उराँव रेलिजन एंड कास्टम (१९२८) यह पुस्तक लिखी। इसमें उरांव जनजाति के धार्मिक रीति–रिवाजों पर किया अध्ययन प्रस्तुत है। इसके बाद धीरेंद्र नाथ मजुमदार ने छोटा नागपुर के सिंहभूम की हो जनजाति पर गहन अध्ययन कर बोंगावाद (Bongaism) की अवधारणा को प्रस्तुत किया। जिसमें उन्होंने अपनी पुस्तक अफेयर्स आफ ए ट्राईब (१९५०) में बोंगावाद की विस्तार व्याख्या की है। "हो जनजाति के लोग अपने सबसे बड़े देवता को 'बोंगा' कहते हैं। बोंगा उनके सभी प्रकार के कर्म एवं फलों को प्रभावित करता है। सफलता–विफलता, सुख–दुख, जन्म–मरण इत्यादि के लिए बोंगा जिम्मेदार होता है, इसलिए विभिन्न अवसरों पर पूजा द्वारा बोंगा को प्रसन्न करने का प्रयास किया जाता है।"[१] ब्रिटिश मानवविज्ञानी वैरियर एलविन ने भी अपनी पुस्तक रेलिजन आफ एन इंडियन ट्राईब (१९५५) में सावरा जनजाति का धार्मिक अध्ययन किया था।

जीववाद के अनुसार आदिम मनुष्य निद्रावस्था में स्वयं को कई कार्यों में लिप्त पाता जैसे कि पूर्वजों से मिलना, उनके साथ घूमना, बैठना, बतियाना आदि। आदिमानव चेतन अवस्था में अपनी प्रतिध्वनी सुनता, तालाब, नदी व जलाशयों आदि में स्वयं का प्रतिबिंब देखता। ऐसे समय वह अपनी छाया से स्वयं को अलग नहीं कर पाता था। इन अनुभवों से गुजरते समय अपने किसी परिचित की प्राकृतिक या दुर्घटना में मृत्यु से वह सोचने लगा कि ऐसा क्या हुआ जिससे जीवित व्यक्ति की जीवनलीला, उसकी मौखिक एवं अमौखिक क्रियाएँ अचानक खत्म हो गयी? वह सोचने लगा कि मृत्यु के पश्चात मृतक तो (सपनों आदि में) पूर्ववत दिखाई दे रहा है, किंतु वह यथार्थ में शरीर रूप में क्यों नहीं दिखायी देता? आदिमानव

ने इन घटनाओं से बोध प्राप्त करते हुए वह अगोचर वस्तु या शक्ति, जिसके देह में रहने तक व्यक्ति जिंदा रहता है और इसके देह से निकास से वह मर जाता है, को 'आत्मा' या 'जीव' कहा। टायलर के अनुसार "मानव शरीर में दो आत्माएँ होती हैं। पहली मुक्त आत्मा, जो मनुष्य के शरीर से बाहर जा सकती है और हर तरह के अनुभव कर सकती है, और दूसरी देह आत्मा, जो मनुष्य का शरीर छोड़ देती है तो वह मर जाता है। मुक्त आत्मा का संबंध और प्रतिनिधित्व श्वास–प्रश्वास एव छाया से है तो देह आत्मा का संबंध रक्त एवं सिर से।"[२]

आदिमानव इन तमाम अनुभवों से गुजरते हुए इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि जब देहात्मा शरीर को स्थायी रूप से त्याग देती है तो व्यक्ति मर जाता है। और उसकी आत्मा भूत, बोंगा यानी प्रेतात्मा बन जाती है। कई अर्सा पूर्व मृत व्यक्तियों को स्वप्न में देख आदि मानव ने आत्मा को अमर मान लिया। भारत में हो, टोडा, कोटा आदि जनजातियों में हरी और सूखी नामक दो मृत्यु क्रियाएँ निभायी जाती हैं। इसका कारण है देहात्मा द्वारा अस्थायी या स्थायी रूप में शरीर छोड़ देने की अनिश्चितता। हर मृत्यु–क्रिया व्यक्ति की मृत्यु के तत्काल निभायी जाती है लेकिन सूखी मृत्यु क्रिया कुछ दिन बीतने के बाद, जब विश्वास हो जाता है कि अब आत्मा लौटकर कभी नहीं आएगी। सूखी मृत्यु क्रिया को मृतक के इस दुनिया से सारे बंधन पूर्णतः टूट जाने और उसके दूसरी दुनिया में प्रवेश का प्रतीक माना जाता है। हो समुदाय में इन दोनों क्रियाओं के लिए क्रमशः 'जंगतोपा' और 'टोपम जंगटोपम' कहा जाता है। और कोटा जनजाति में इसे क्रमशः 'पसदऊ' और 'वर्लदऊ' कहा जाता है। टायलर कहता है, "इन अमूर्त एवं अभौतिक प्रेतात्माओं के प्रति भय एवं श्रद्धा की अभिवृत्ति ही आदिम धर्म का मूल और प्राचीनतम प्रकार है। ये प्रेतात्माएँ हमारे नियंत्रण में नहीं होती। इसीलिए इनकी पूजा–अराधना की जाती है, ताकि ये कोई नुकसान नहीं पहुँचाए एवं यथा आवश्यकता सहायक सिद्ध हो सके।"[३]

'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' उपन्यास में 'जंगतोपा' या 'जंगटोपा' की विधि का चित्रण हुआ है। जाम्बीरा की पत्नी मेन्जारी और उसके बेटे की हाथी के कुचलने की दुर्घटना में मृत्यु होती है। उन्हें हसा हुवांग(कब्र)में दफनाया जाता है। जाम्बीरा, पत्नी की मृत्यु–शोक में हसा हुवांग को खोदने लगता ताकि मेन्जारी को उसने दिये वचन के अनुसार अंदु पहना सके या फिर वह उन दोनों की हड्डी के टुकड़े निकालने की कोशिश करता। लोगों के टोकने पर वह कहता, "इनकी हड्डी को नये घड़े में लेकर पूरे गाँव में नचाऊँगा मैं। फिर जंगतोपा कर दूंगा....जंगतोपा कर देने से हो सकता है कि कभी वे दोनों जीवित ही हो उठें।"[४] जाम्बीरा का जंगतोपा करना यानी टायलर द्वारा वर्णित हरी मृत्यु की क्रिया का उदाहरण है, जाम्बीरा को अब भी विश्वास था कि मेन्जारी और उसके बेटे की आत्मा फिर से लौट आये और वे जिंदा हो। जंगतोपा की विधि में जाम्बीरा अकेला ही नगाड़ा बजा–बजाकर हरी मृतक की आत्माओं को लौट आने का आवाह्न करता है लेकिन आत्मा लौट नहीं आती। आखिरकार सूखी मृत्यु की क्रिया संपन्न हो जाती है। "दफनाने के ठीक सात दिन बाद सबसि! मृतकों का अंतिम संस्कार! अपनी प्रिय मेन्जारी से जुड़े तमाम बंधनों का अंत।"[५] मेन्जारी और उसके बेटे की मृत्यु प्राकृतिक नहीं थी, इसलिए उनकी आत्मा को बुलाकर ससम्मान अदिंग (देवता–घर) में नहीं ठहराया गया। उसकी प्यारी मेन्जारी और बच्चे को बाहर से ही विदा कर दिया गया। अब उनकी आत्माएँ खुले में घूमती–भटकती रहेंगी। धूप, बारिश, आंधी, तूफान में खेत, जंगल, नदी, पहाड़ों में उन्हें कहाँ ठौर मिलेगा पता नहीं। ये अतृप्त आत्माएँ यानि अतृप्त प्रेतात्माएँ बन जाती हैं। जिनकी मृत्यु प्राकृतिक होती है, जो आत्माएँ भटकती नहीं वे बोंगा बन जाती हैं। टायलर ने मानव जीवन में प्रेतात्माओं की भूमिका का विश्वास को ही 'जीववाद' कहा है।

जीववाद या बोंगावाद के बारे में 'लाजत अनहद ढोल' उपन्यास में भी चित्रण हुआ है। संतालों की दृष्टि में बोंगा भला और बुरा दोनों प्रकार के होते हैं। यही कारण है कि ये दोनों शक्तियों से भयभीत रहते हैं। संतालों की मान्यता है कि शक्तिमान बुरे बोंगाओं को पूजा–अर्चना से प्रसन्न कराया जा सकता है। उपन्यासकार कहता है, "बोंगा उनका भूत देवता होता है। बोंगा बराबर भूखा, असंतुष्ट और क्रोधी होता है जो इन्हें दंडित करने की कोशिश करता है और पूरा चावल, मुर्गियाँ और हँडिया लेने के बाद ही तुष्ट होता है। इनकी मान्यता है कि मरने के बाद कोई भी पूर्वजों की श्रेणी में आकर बोंगा हो जाता है। प्रत्येक का बोंगा अलग–अलग भी हो सकता है। उसकी पूजा–अर्चना करना, बलिदान देना और भोजन कराना संताल की नियति बन जाती है।"[५] 'पठार पर कोहरा' उपन्यास में असंतुष्ट और बुरे बोंगा जिसे मुंडा लोग नासान् बोंगा कहते हैं, उसका चित्रण हुआ है। रंगेनी को मुंडा समाज ने बहिष्कृत कर दिया था। वह गाँव के बाहर अकेली अपने शिशु सोनारा को लेकर रहती है। अपनी सुरक्षा हेतु रंगेनी भगतीन बन जाती है। जबसे रंगेनी भगतीन बन जाती है तबसे लोग रंगेनी से डरने लगे। क्योंकि "लोग जानते हैं कि रंगेनी के घर के आसपास नासान् बोंगाओं की दुष्ट आत्माएँ बसेड़ा लिए बैठी हैं। आँधी, बाढ़, अकाल, जंगल की आग या मवेशियों के रोग सब नासान् बोंगाओं की बुरी नजर से होती हैं। सारे नासान् बोंगा रंगेनी के इष्ट हैं।"[७] ऐसे बुरे बोंगाओं को पूजा–अर्चना के द्वारा संतुष्ट कराया जाता है जिससे संतुष्ट बोंगा शक्ति का स्त्रोत बन जाते हैं। यह सर्वत्र व्याप्त होती हैं। ये बोंगा शक्ति मानव, पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, नदी, पर्वत के लिए वरदान साबित होती है। यदि बोंगा असंतुष्ट रह जाता है, तो वह महामारी, बाढ़, अकाल, तूफान और मृत्यु जैसी विपदाएँ लाने में सक्षम होता है। इसलिए इन्हें संतुष्ट करने पर बल दिया जाता है।

टोटमवाद : टोटमवाद को 'गण–चिह्नवाद' या 'कुल–प्रतीकवाद' भी कहा जाता है। 'टोटम' जनजातीय धर्म की प्रमुख विशेषता है। "टोटम खम्बे गणचिह्नवाद या टोटम प्रथा (Totemism) किसी समाज के उस विश्वास को कहते हैं, जिसमें मनुष्यों का किसी जानवर, वृक्ष, पौधे या अन्य आत्मा से सम्बन्ध माना जाए।"[८] टोटम यानी एक पदार्थ, आम तौर पर वह एक पशु या पौधा होता है, जिसके प्रति आदिवासी समाज के सदस्य विशेष श्रद्धा का भाव रखते हैं और वे यह अनुभव करते हैं कि उनके और टोटम के बीच भावनात्मक समानता का नाता और बंधन है। गोत्र के सभी सदस्यों के लिए टोटम पूजनीय वस्तु होती है। कभी–कभी टोटम को पूर्वज के रूप में भी स्वीकृत कर लिया जाता है। डी.एन. मजुमदार के अनुसार, "टोटम वह पेड़, पौधा अथवा पशु है जिसके नाम पर एक जनजाति में कोई गोत्र अपना नामकरण करता है।"[९] भारतीय आदिवासियों में टोटम का विकास मूलतः प्रोटो–आस्ट्रोलाइड नस्ल द्वारा हुआ। किंतु इसके अवशिष्ट रूप को असम की मंगोलाइड नस्ल की नागा जनजातियों में भी पाया जाता है। बाद में जाकर वह कई जनजातियों में विस्तारित होता गया।

टोटम की व्युत्पत्ति को लेकर कई मानवविज्ञानियों ने अपने विचार रखे हैं। मानवविज्ञानी फ्रेजर का मानना है कि आदिम मानव गर्भ निर्धारण में यौन सहवास की भूमिका से अपरिचित थे। गर्भ के काफी विकसित हो जाने पर ही वे गर्भ से अवगत हो जाते थे। इस बोध की स्थिति में वे निकटतम के किसी पशु या पौधे को ही गर्भ निर्धारण की वजह मान बैठते थे, यही उनका टोटम बन जाता था। मानवविज्ञानी है पकिन्स टोटम की व्युत्पत्ति के बारे में मानता है कि आदि मानव को भोजन प्रदान करने वाले पेड़–पौधे या पशुओं के प्रति श्रद्धा भाव की अभिव्यक्ति से टोटम की व्युत्पत्ति हुई। मानवविज्ञानी टायलर का मानना है कि आत्मा मृत्यु के बाद सदा के लिए अजन्मी नहीं रहती बल्कि वह अन्य किसी दूसरी नस्ल के प्राणी

Scanned with CamScanner

में प्रवेश कर जाती है। अब तक यह खोजना संभव नहीं हो पाया कि मानव आत्मा और अन्य प्राणियों की आत्मा में क्या अंतर है। अतः आदिम मानव ने मानव-आत्मा निम्न प्राणियों के शरीर में चली जाती है, को स्वीकार कर लिया। इसी कारण आदि मानव अपने पूर्वजों को जो सम्मान देता था, वही सम्मान वह पशुओं को भी देने लगा। इससे ही टोटमवाद की व्युत्पत्ति हुई।

टोटम की व्युत्पत्ति के बारे में कई जनजातियों में कई लोककथाएँ प्राप्त होती हैं, जिससे टोटम की व्युत्पत्ति पर प्रकाश पड़ता है। 'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' उपन्यास में 'हो' जनजाति के प्रमुख 'किली' अर्थात् गोत्र 'तुबिद' की व्युत्पत्ति को लेकर तुबिद गोत्र में आदिकाल से प्रचलित कथा को संक्षेप में रखा गया है, जिससे तुबिद गोत्र की व्युत्पत्ति किस प्रकार हुई, इसका पता चलता है। मरंग गोडा के लागुरी गोत्र के सगेन का तुबिद गोत्र की चारिबा से परिचय हो जाता है। दोनों हो भाषा में बतियाते हैं लेकिन उन्हें एक दूसरे के गोत्र के बारे में पता नहीं था। सगेन, चारिबा को कहता है तुम किस गोत्र की हो? चारिबा ने जवाब दिया मैं तुबिद गोत्र की हूँ, तुबिद याने चूहे का बिल। चारिबा की मस्खरी करते हुए सगेन कहता है कि यानि तुम्हारा जन्म चूहे के बिल में हुआ है। तब चारिबा कहती है, "धत्त! मैं क्यों जन्मूँगी चूहे के बिल में? वो तो एक बार आदिकाल में कुछ ही लोग कोल्हान की ओर आ रहे थे। रास्ते में एक हो औरत ने एक बच्चे को जन्म दिया। चूँकि हमारे समाज में जन्म के बाद बच्चे की नाल एवं पुरइन को घड़े में रखकर जमीन में गाड़ दिया जाता है, इसलिए एक घड़े की आवश्यकता पड़ गयी। अब उस घने जंगल के बीच घड़ा कहां से मिलता? इसलिए नाल पुरइन को एक चूहे के बिल में गाड दिया गया। उस समय से उस बालक का गोत्र तुबिद रखा गया। हम लोग उसी बालक के वंशज हैं।"[६]

उराँवों के कुजुर कुल के मूल को लेकर कहा जाता है कि एक उराँव कुजुर पेड़ तले सो गया था। उस पौधे की मुलायम टहनियों ने उस उराँव के शरीर को चारो ओर से लिपटकर उसकी जंगली जंतुओं से रक्षा की तब से उस उराँव ने कुजुर के पौधे को अपना टोटम स्वीकार किया। आज उसके वंशज कुजुर गोत्र के कहलाते हैं। तामरियों में टोटम की व्युत्पत्ति को लेकर कई कथाएँ प्रचलित हैं, उनमें से नागगुष्ठी और कमल गोत्र की कथाएँ उल्लेखनीय हैं। आदिकाल में एक तामरिया स्त्री नदी पर पानी भरने के लिए गई थी। उसका बच्चा घर पर ही था। पानी लेकर जब वह घर लौटी तो उसने देखा कि एक नाग फन फैलाए बच्चे की रक्षा कर रहा है। माँ को देखकर साँप वहाँ से निकल गया। तब से उस बच्चे के तमाम वंशज नागगुष्ठी गोत्र के कहलाएँ। इस गोत्र के लोग नाग को या साँप को मारने का साहस नहीं करते। तामरियों में कमल गोत्र की व्युत्पत्ति के बारे में कमल-गोत्रिय लोगों में धारणा है कि तामरियों के किसी शिकारी दल ने हिरन को मारकर उसका मांस आपस में बाँट लिया, उनमें से एक सदस्य ने अपने हिस्से के मांस को कमल के पत्ते पर रखकर खाया, तबसे उसका और उसके वंशजों का गोत्र कमल बन गया।

टोटम या गोत्र चिह्न को लेकर कई नियमों का पालन किया जाता है। टोटम प्राणी को न मारना, उसका मांस न खाना, टोटम पेड़ का फल न खाना, टोटम प्राणी की मृत्यु पर शोक जताना, टोटमी प्राणी के चित्रों को घर की भीत्ति या खंबों पर अंकित करना, टोटम चिह्न को शरीर पर गुदवा लेना टोटम प्राणी की वृद्धि हेतु समारोहों का आयोजन करना, टोटमी चिह्नों को ताबीज के रूप में पहनना आदि। मजुमदार टोटमी गोत्रों के विभाजन पर ध्यान आकर्षित करते हुए कहते हैं, "बहुधा पूरे पशु, फूल या फल टोटम नहीं होते बल्कि पशु का जिगर, फेफड़ा या आंते, फूल का रस या फल और उसकी गिरी टोटम रूप में

Scanned with CamScanner

स्वीकार किए जाते हैं। टोटम पशु या पौधे के इस विभाजन का कारण मौलिक समूहों की वृद्धि रहा होगा। टोटमी समूह सामाजिक जीवन की बढ़ती हुई आवश्कताओं को पूरा करने के लिए एक से अधिक टोटमी समूहों में बँटा है।[१०] जब टोटमी कुल के सदस्यों की संख्या बढ़ जाती है तो वह अनेक उप–टोटमों में विभक्त होकर दूसरे स्थान पर बस जाते है। तब उप टोटमी समूह अपने मूल टोटम पशु या पौधे के अंग को अपना टोटम स्वीकारते हैं। एक टोटमी समूह बहिर्विवाही होते हैं क्योंकि वे मानते हैं कि उनमें खून का रिश्ता होता है। एक ही टोटम को माननेवालों में आत्मीयता, सामूहिकता की एवं भाईचारे की भावना पायी जाती है। क्योंकि एक टोटमी परिवार के लोग एक–दूसरे में खून का नाता मानते हैं।

निष्कर्ष : उपर्युक्त रीति से जनजातीय धर्म की अवधारणा में आत्मावाद और टोटमवाद पर विश्वास किया जाता है। ये आदिवासी धर्म की अपनी विशेषता है। यही वह अवधारणा है जो आदिवासी समाज और गैर आदिवासी समाज में पार्थक्य किए हुए है। आदिवासियों की जीववाद की अवधारणा व्यक्ति को अनुचित कार्य करने से बचाती है, तो टोटम की अवधारणा पर्यावरण सुरक्षा का मूल्य प्रदान करती है। साथ ही यह अवधारणा आपसी बंधुत्व और सामूहिकता को बनाए रखती है।

संदर्भ

१. पाण्डेय, गया; २००६, मानवशास्त्रीय अनुसंधान विधि एवं तकनीक, कंसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ.२१
२. मजूमदार डी.एन. एवं मदन, टी.एन.; १९७४, (हिंदी अनुवादः भारद्वाज, गोपाल) सामाजिक मानवशास्त्र परिचय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, प्र. सं., पृ.१३६
३. वही, पृ.१३६
४. माजी, महुआ; २०१२, मरंग गोडा नीलकंठ हुआ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. संस्करण, पृ.५१
५. वहीं, पृ.५१
६. सिंह, मधुकर, २००३, बाजत अनहद ढोल, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. संस्करण, भारतीय ज्ञानपीठ, प्र. संस्करण, पृ.६
७. सिंह, राकेश कुमार, २००३, पठार पर कोहरा, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्र. संस्करण, पृ.७५
८. https://hi-unionpedia-org/VksVe_çFkk
९. मजूमदार डी.एन.; एव मदन, टी.एन., १९७४, (हिंदी अनुवाद : भारद्वाज, गोपाल) सामाजिक मानवशास्त्र परिचय, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, पृ.५०३
१०. माजी, महुआ; २०१२, मरंग गोडा नीलकंठ हुआ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. संस्करण, पृ.१३५
११. मजूमदार, डी.एन.; १९८८, भारतीय जन संस्कृति, अपाला प्रकाशन, मुद्रण सहकारी समिति लि. लखनऊ, संस्करण, पृ.७६

Scanned with CamScanner